एवरशाइन

संस्कृत व्याकरण

कक्षा-8

लेखक

डॉ॰ शशिकान्त पाण्डेय

अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग

आर॰सी॰एस॰ कॉलेज, भंभौल, बेगूसराय

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

WZ-348, नाँगल राया, नई दिल्ली-110046

प्रकाशक
एवरशाइन पब्लिशर्ज़
WZ-348, नाँगल राया, नई दिल्ली-110046
फ़ोन – 28111758, 28113958, फैक्स – 28112353

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मुद्रक : ताज प्रेस, ए-35/4, मायापुरी, नई दिल्ली

शुभाशंसा

संस्कृत-व्याकरण की यह पुस्तक माध्यमिक कक्षा के लिए लिखी गई है । मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि लेखक ने बड़े मनोयोग से संस्कृत-व्याकरण के आरम्भिक विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी पुस्तक प्रस्तुत की है, जिसमें सरल एवं सुबोध भाषा का प्रयोग किया गया है । मैं आशा करता हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थ न केवल माध्यमिक कक्षा के छात्रों के लिए, अपितु संस्कृत-व्याकरण के सामान्य जिज्ञासुओं के लिए भी समान रूप से उपादेय होगा । ग्रन्थ का अवलोकन करने पर यह प्रतीत होता है कि इसमें विद्यार्थियों के स्तर का ध्यान रखते हुए सरलता की ओर लेखक ने विशेष ध्यान दिया है । लेखक का यह प्रयास श्लाघनीय है । पारिभाषिक पदावली का आंग्ल-रूपान्तरण ग्रन्थ की उपादेयता को बढ़ाता है । निस्सन्देह यह पुस्तक संस्कृत के अध्ययन के प्रति छात्रों की रुचि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी ।

इस प्रस्तुति के लिए मैं अपने शिष्य आयुष्मान् डॉ॰ शशिकान्त को वर्धापन देते हुए यह कामना करता हूँ कि वे 'विद्याभ्यसनं व्यसनम्' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए वाग्देवी की उपासना में निरन्तर संलग्न रहें ।

प्रो॰ अवनीन्द्र कुमार
आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ।

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ-संख्या
1.	संस्कृत भाषा एवं उसकी वर्णमाला (Sanskrit Language and its Alphabets)	7-17
2.	सन्धि (Euphony)	18-38
3.	समास (Compounds)	39-55
4.	कारक और विभक्ति (Case and Case-endings)	56-60
5.	नाम-शब्दों की रूपावली (Declensions of Nouns)	61-80
6.	सर्वनाम तथा संख्यावाचक शब्दों के रूप (Declensions of Pronouns and Numerals)	81-92
7.	क्रिया-शब्दों की रूपावली (धातु-रूप) (Conjugation of Roots)	93-117
8.	प्रेरणार्थक क्रिया-पद (Causative Verbal Words)	118-122
9.	कृदन्त-प्रकरण (Primary Derivatives)	123-130
10.	स्त्री-प्रत्यय (Feminine Suffixes)	131-132
11.	उपसर्ग (Prefixes)	133-136
12.	अव्यय (Indeclinables)	137-142
13.	वाच्य-परिवर्तन (Change of Voice)	143-146
14.	अनुवाद (Translation)	147-153
15.	निबन्ध तथा पत्र-लेखन (Essay and Letter writing)	154-159
16.	व्यावहारिक-शब्दकोश (Glossary)	160-168

प्राक्कथन

संस्कृत-व्याकरण की यह पुस्तक सम्बद्ध कक्षा के नवीन पाठ्यक्रमानुसार लिखी गई है । संस्कृति की आत्मा सदैव साहित्य, संगीत और कला में ही निवास करती है । संस्कृत-व्याकरण का ज्ञान कराकर इसके साहित्य की ओर छात्रों को आकर्षित करना तथा इसके अध्ययन के प्रति रुचि जगाना ही इस रचना का प्रधान उद्देश्य है क्योंकि संस्कृत साहित्य ही हमारी भारतीय मनीषा के गौरवमय अतीत का सुनहरा दर्पण है । इस भाषा के संवर्धन तथा पोषण हेतु वर्ष 99-2000 को संस्कृत वर्ष के रूप में मनाते हुए देशभर में कई आयोजन हुए । इसी सन्दर्भ में वर्ष 2001 में विश्व संस्कृत सम्मेलन का भी आयोजन किया गया था । उस अवसर पर मैंने स्पोकन-संस्कृत नामक पुस्तक लिखी थी । विगत कई वर्षों से संस्कृत अध्ययन-अध्यापन के प्रति जनमानस विशेषकर माध्यमिक स्तर के छात्रों में इस भाषा के प्रति घटती रुचि विशेष चिन्ता का विषय है । मेरे मन में कई वर्षों से यह इच्छा थी कि विद्यालय स्तर के छात्रों को किस प्रकार सरल एवं रुचिकर ढ़ंग से इस भाषा से परिचित कराऊँ । इसी कारण जब एवरशाइन प्रकाशन के श्री संजय जी ने मुझे माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए संस्कृत-व्याकरण की पुस्तक लिखने का उत्तरदायित्व सौंपना चाहा तो मैंने इसे सहर्ष ही स्वीकार कर लिया ।

मैं अपने प्रयास में कहाँ तक सफल हो सका हूँ – इसका निर्णय आप विद्वज्जन अध्यापकों तथा छात्रों पर ही छोड़ रहा हूँ । माध्यमिक स्तर की पुस्तकों के प्रारम्भ में लेखकीय वक्तव्यों में प्रायः स्वरचित ग्रन्थ की विशेषताएँ बताई जाती हैं, परन्तु ऐसा करते हुए मुझे आत्मश्लाघा का अनुभव हो रहा है । अतः इसकी समालोचना का कार्य आप सुधी अध्येताओं पर ही छोड़ रहा हूँ ।

इस पुस्तक के लेखन कार्य में मुझ पर अहेतुकी कृपा रखने वालों की शुभाशंसा ही मेरी प्रेरणा का उत्स है । इस सन्दर्भ में डा० शशि तिवारी, रीडर, मैत्रेयी कॉलेज; डा० शुक्ला मुखर्जी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली; डा० शकुन्तला पुज्जानी एवं आदरणीय दीदी डा० शारदा शर्मा, रिसर्च साइन्टिस्ट, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रति मैं

श्रद्धावनत हूँ, जिन्होंने इस प्रकार के रचनात्मक कार्यों के लिए सर्वदा मुझे प्रोत्साहित किया है । आप सबों के प्रति कृतज्ञताज्ञापन इस बालबुद्धि की धृष्टता होगी । प्रो॰ चन्द्रकान्त शुक्ल, उपकुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार); डा॰ कांशीराम जी, संस्कृत विभाग, हंसराज कॉलेज जैसे गुरुओं तथा आदरणीय चाचा जी डा॰ रामकरण शर्मा, पूर्व कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं वाराणसी की प्रेरणा से ही व्याकरण अध्ययन में मेरी प्रवृत्ति हुई । मैं इनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ ।

अपने स्नेहिल लोचनों से जिस सूक्ष्मता से इस पुस्तक का निरीक्षण करके इसके प्रत्येक पक्ष से मुझे अवगत कराया गया, तदर्थ अपने मित्र मण्डली के सदस्यों को धन्यवाद देकर मित्रता को औपचारिकता में आबद्ध नहीं करना चाहता हूँ । ग्रन्थ के कुशल टंकण के लिए जैन कम्प्यूटर्स के आलोक जी साधुवाद के पात्र हैं ।

प्रस्तुत पुस्तक के किसी अंश में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो आप अध्यापकों तथा छात्रों से विनम्र निवेदन है कि प्रकाशक को पत्र द्वारा सूचित कर मुझे उपकृत करें । आगामी संस्करण में उन त्रुटियों को दूर करने हेतु आपके पत्रों का स्वागत है ।

– शशिकान्त पाण्डेय

1. संस्कृत भाषा एवं उसकी वर्णमाला
(Sanskrit Language and its Alphabets)

भाषा

भाषा शब्द संस्कृत के **भाष्** धातु से बना है, जिसका तात्पर्य है – बोलना । वस्तुतः बोलकर ही मनुष्य दूसरों के सामने अपने भावों और विचारों को प्रकट करता है । भाषा के विकास से पूर्व मनुष्य अन्य साधनों, जैसे संकेत आदि के द्वारा अपना काम चलाता था, जिसमें कई सारी परेशानियाँ भी थीं । इन परेशानियों को दूर करने के मानवीय प्रयास ने ही भाषा को जन्म दिया । इस प्रकार **"भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर अपने विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करता है, तथा जिसे सुनकर दूसरों के भावों अथवा विचारों से अवगत होता है ।"**

संस्कृत-भाषा

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है । मनुष्य के परस्पर वार्तालाप (बोलचाल) की आवश्यकता की पूर्ति के लिए विकसित हुई विश्वभाषाओं में यह भाषा सर्वाधिक वैज्ञानिक है । संस्कृत शब्द का अर्थ है – 'संस्कार की हुई' अथवा शुद्ध की हुई । इस भाषा का विकास भी अपने स्वरूप और प्रयोग की दृष्टि से शताब्दियों में हुआ । पहले इसके स्वरूप और प्रयोग दोनों में पर्याप्त अस्तव्यस्तता थी । अत्यन्त प्रारम्भ में यह वर्तमान अर्थों में परिष्कृत नहीं थी । अर्थ-बोध के लिए जब इसमें प्रयुक्त शब्दों को प्रकृति और प्रत्यय में विभाजित कर इस भाषा में संस्कार ला दिया गया तब इसका नाम संस्कृत पड़ा – **प्रकृति-प्रत्ययौ संयोज्य कृता रचिताभाषा संस्कृतभाषा** । यह संस्कार लाना दिव्य-पुरुषों का कार्य था । अतः इसे देवभाषा भी कहा गया है ।

लिपि (Script)

भाषा का प्रयोग दो रूपों में होता है – **बोलकर** और **लिखकर** । किसी भी भाषा को लिखित रूप प्रदान करने के लिए **लिपि** की सहायता ली जाती है । जैसे – देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी, ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपि आदि । प्रत्येक भाषा की अपनी अलग-अलग लिपि होती है । संस्कृत तथा हिन्दी दोनों भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है ।

व्याकरण (Grammar)

किसी भी भाषा का शुद्ध एवं पूर्ण ज्ञान उसके व्याकरण को जाने बिना सम्भव नहीं है । भाषा को बोलते या लिखते समय हम वाक्यों का प्रयोग करते हैं । वाक्य शब्दों से बनते हैं । जिस शास्त्र

के द्वारा शब्दों को खण्ड-खण्ड करके प्रकृति-प्रत्यय रूपी व्युत्पत्ति के द्वारा उन शब्दों के वास्तविक स्वरूप और अर्थ को बतलाया जाता है, उसे व्याकरण-शास्त्र कहते हैं । व्याकरण को 'शब्दशास्त्र' भी कहते हैं । व्याकरण के तीन मुख्य अंग होते हैं –

1. वर्ण-विचार (Phonology)
2. शब्द विचार (Etymology)
3. वाक्य-विचार (Syntax)

वर्ण मिलकर शब्द बनते हैं तथा शब्दों के मिलने से वाक्य बनते हैं । वर्ण या अक्षर ही भाषा की सबसे छोटी संरचनात्मक इकाई है । व्याकरण में **वर्ण-विचार** के अन्तर्गत उस भाषा के वर्णों का आकार-प्रकार, उच्चारण-स्थान तथा उनका संयोग आदि आते हैं । **शब्द-विचार** के अन्तर्गत शब्दों के प्रकृति-प्रत्यय पर विचार किया जाता है । इसमें शब्दों के रूप, लिंग और वचन तथा धातुओं के पुरुष, वचन एवं काल आदि की भी चर्चा की जाती है । **वाक्य-विचार** के अन्तर्गत वाक्यों का निर्माण एवं पत्र तथा निबन्ध आदि के लेखन का ज्ञान कराया जाता है ।

वर्ण (Alphabet)

वर्ण्यते अभिव्यंज्यते वा लघुतमो ध्वनिः येन स वर्णः – अर्थात् जिसके द्वारा ध्वनि का लघुतम अंश व्यञ्जित किया जाता है, उसे **वर्ण** कहते हैं । "वर्ण" को ही "अक्षर" भी कहते हैं । अक्षर से तात्पर्य है – **"न क्षरः क्षरणं यस्मात् तद् अक्षरम्"** – अर्थात् "ध्वनि का वह सबसे छोटा रूप अक्षर है, जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते" । जैसे – सुरेशः खादति । इस वाक्य में 2 शब्द हैं । इनमें से प्रत्येक शब्द कई वर्णों से बना है –

जैसे – सुरेशः – स् + उ + र् + ए + श् + अ + स् (:)
खादति – ख् + आ + द् + अ + त् + इ ।

शब्द (Word)

वर्णों का ऐसा समूह जो किसी अर्थ को प्रकट करता है, **शब्द** कहलाता है । जैसे – विद्यालय – व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ । वर्णों का ऐसा संयोग जो अनर्थक हो, उसकी चर्चा व्याकरण-शास्त्र में नहीं की जाती है ।

वाक्य (Sentence)

सार्थक शब्द मिलकर जब कोई निश्चित अर्थ प्रकट करते हैं, तो उस शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं । जैसे – राम घर जाता है – यह शब्द-समूह एक अर्थ को अभिव्यक्त करता है, अतः यह एक वाक्य है । परन्तु इसी वाक्य में अगर शब्दों के क्रम बदल दिए जाएँ, तो यही शब्द-समूह निरर्थक हो जाएगा, तब इसे वाक्य नहीं कहा जा सकता । संस्कृत-व्याकरण में अर्थ की दृष्टि से वाक्य ही भाषा की मौलिक इकाई है ।

संस्कृत-वर्णमाला (Sanskrit-Alphabets)

वर्णों के क्रमिक समूह को ही **वर्णमाला** (Alphabets) कहते हैं । संस्कृत-वर्णमाला के वर्णों को तीन भागों में बाँटा गया है । संस्कृत वर्णमाला में कुल 48 वर्ण हैं ।

वर्ण

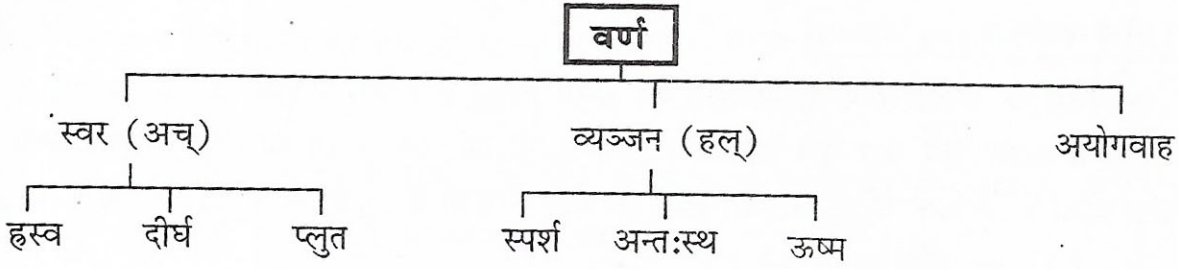

- स्वर (अच्)
  - ह्रस्व
  - दीर्घ
  - प्लुत
- व्यञ्जन (हल्)
  - स्पर्श
  - अन्त:स्थ
  - ऊष्म
- अयोगवाह

संस्कृत-वर्णमाला में निम्नलिखित वर्ण हैं –

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ।
ऋ, लृ, ॠ ।
ए, ऐ, ओ, औ । — स्वर

(कवर्ग) – क्, ख्, ग्, घ्, ङ् ।
(चवर्ग) – च्, छ्, ज्, झ्, ञ् ।
(टवर्ग) – ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् ।
(तवर्ग) – त्, थ्, द्, ध्, न् ।
(पवर्ग) – प्, फ्, ब्, भ्, म् । — स्पर्श

य्, र्, ल्, व् । — अन्त:स्थ

श्, ष्, स्, ह् । — ऊष्म

(स्पर्श, अन्त:स्थ, ऊष्म — व्यञ्जन)

ं (अनुस्वार)
: (विसर्ग) — अयोगवाह

स्वर-वर्ण (Vowels)

जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण का सहारा नहीं लेना पड़ता, उन्हें स्वर वर्ण कहा जाता है । संस्कृत व्याकरण में स्वरों को **अच्** भी कहा जाता है । इनकी संख्या 13 है । 'स्वर' वर्ण तीन प्रकार के होते हैं – ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत ।

एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो, द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चाऽर्धमात्रकम् ।

(1) ह्रस्व-स्वर (Short Vowels)

इन स्वरों के उच्चारण में **एक** मात्रा (Mora) का समय लगता है । जैसे – अ, इ, उ, ऋ, ऌ । ये **पाँचों** ह्रस्व स्वर माने जाते हैं ।

(2) दीर्घ-स्वर (Long Vowels)

इन स्वरों के उच्चारण में **दो** मात्राओं का समय लगता है । जैसे – आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ । ये **आठ** दीर्घ स्वर माने जाते हैं । इनमें ए, ऐ, ओ, औ – इन चारों को **संयुक्त स्वर** भी कहा जाता है, क्योंकि ये दो असमान स्वरों के मेल से बनते हैं – **ए**(अ + इ), **ऐ**(आ + इ), **ओ**(अ + उ), तथा **औ**(आ + उ) ।

(3) प्लुत-स्वर (Longest Vowels)

इन स्वरों के उच्चारण में **तीन** मात्राओं का समय लगता है । प्लुत स्वरों को लिखने की कोई अलग विधि नहीं है । कोई भी ह्रस्व या दीर्घ स्वर जब तीन मात्राओं का समय लेकर उच्चरित होता है, तो वह प्लुत हो जाता है । प्लुत स्वर का प्रयोग वैदिक प्रक्रिया में अथवा किसी को बुलाने में प्रयुक्त होता है । प्लुत स्वर बताने के लिए उस स्वर के बाद '३' लिख दिया जाता है ।

जैसे – ओ३म्, भो: राम३ ।

प्लुत स्वरों की संख्या 9 है – अ३, इ३, उ३, ऋ३, ऌ३, ए३, ऐ३, ओ३, औ३ ।

प्राय: ह्रस्व व दीर्घ स्वरों का ही अधिक प्रयोग होने से स्वरों की संख्या 13 ही मानी जाती है ।

अनुनासिक-स्वर

उपर्युक्त सभी स्वर जब मुख के साथ ही नाक से भी बोले जाते हैं, तब इन्हें **अनुनासिक स्वर** कहते हैं । जैसे – अँ, आँ, आँ३ आदि ।

स्वरों को अनुनासिक बताने के लिए उसके ऊपर चन्द्रबिन्दु (ँ) लगा देते हैं ।

अननुनासिक-स्वर

सभी स्वर जब केवल मुख से ही बोले जाते हैं, तब इन्हें **अननुनासिक** कहते हैं । जैसे – अ, आ इत्यादि ।

व्यञ्जन-वर्ण (Consonants)

जिन वर्णों के उच्चारण में किसी स्वर वर्ण का सहारा लेना पड़ता है, उन्हें **व्यञ्जन** वर्ण कहा जाता है । व्यञ्जनों को संस्कृत व्याकरण में **हल्** भी कहा जाता है । स्वरों के बिना व्यञ्जन उच्चरित

नहीं हो सकते । स्वर रहित व्यञ्जनों को **हलन्त** कहा जाता है । ऐसे व्यञ्जनों को बताने के लिए व्यञ्जन के नीचे दाईं ओर एक टेढ़ी रेखा का प्रयोग किया जाता है । जैसे – क्, ख्, ग् इत्यादि । इन व्यञ्जनों के उच्चारण के लिए 'अ' अथवा कोई स्वर मिलाना पड़ता है । जैसे क् + अ = क, क् + आ = का, क् + इ = कि आदि ।

व्यञ्जन तीन प्रकार के होते हैं ।

1. स्पर्श (Mutes)

इन वर्णों के उच्चारण में जीभ, उस वर्ण के उच्चारण-स्थान का पूर्ण रूप से स्पर्श करती है । 'क्' से लेकर 'म्' तक के पच्चीस वर्ण **'स्पर्श वर्ण'** कहलाते हैं । इन वर्णों को पाँच वर्गों में बाँटा गया है तथा प्रत्येक वर्ग का नाम उस वर्ग के प्रथम वर्ण के आधार पर रखा गया है, जैसे –

कवर्ग	–	क्, ख्, ग्, घ्, ङ् ।
चवर्ग	–	च्, छ्, ज्, झ्, ञ् ।
टवर्ग	–	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् ।
तवर्ग	–	त्, थ्, द्, ध्, न् ।
पवर्ग	–	प्, फ्, ब्, भ्, म् ।

2. अन्तःस्थ (Semi-Vowels)

इन वर्णों के उच्चारण में जीभ उनके उच्चारण-स्थान का थोड़ा सा ही स्पर्श करती है । ये स्वर और व्यञ्जन के बीच के वर्ण हैं । ये निम्नलिखित 4 हैं – **य्, र्, ल्, व्** ।

इनके उच्चारण के समय ये वर्ण मुख की वायु के साथ मुख में ही ठहरे हुए से (**अन्तः** = मुख के अन्दर, **स्थ** = ठहरे हुए से) लगते हैं । स्पर्श तथा ऊष्म वर्णों के मध्य (अन्तः) में स्थित (स्थ) होने के कारण भी इन वर्णों को **'अन्तःस्थ'** कहते हैं ।

3. ऊष्म (Sibilants)

इन वर्णों के उच्चारण में गर्म वायु (ऊष्म वायु) मुख से बाहर निकलती है । ये चार हैं – **श्, ष्, स्** तथा **ह्** ।

अयोगवाह (Suprasegmental letters)

ये अधूरे वर्ण होते हैं । ये वर्ण अकेले नहीं रहते, अपितु स्वरों या उनकी मात्राओं के बाद लगकर भाषा में प्रयुक्त होते हैं । प्रयोग में आने वाले 2 अयोगवाह हैं – **अनुस्वार** (Nasal) तथा **विसर्ग** (Visarga) ।

अनुस्वार

अनुस्वार का उच्चारण नाक से होता है । **अं** आदि में ऊपर बिन्दु लगा वर्ण **अनुस्वार** है । स्वरों को बताते हुए अनुनासिक-स्वर पहले बताए गए हैं । अनुनासिक में मुख और नाक दोनों काम करते हैं, परन्तु अनुस्वार केवल नाक की सहायता से बोला जाता है । अनुस्वार में ध्वनि दबाकर बोली जाती है, परन्तु अनुनासिक में हल्की ।

विसर्ग

बालकः, रामः आदि शब्दों में दो बिन्दुओं के द्वारा द्योतित वर्ण **विसर्ग** है । इसका उच्चारण ह् के समान होता है ।

वर्णों का परस्पर मेल (Combining of letters)

1. व्यञ्जनों का स्वरों से मेल

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि व्यञ्जनों को स्वतन्त्र रूप से उच्चरित नहीं किया जा सकता । उनके उच्चारण के लिए किसी न किसी स्वर की सहायता ली जाती है । व्यञ्जन जब किसी स्वर के साथ मिलते हैं तो स्वर अपना रूप बदल कर मात्राओं के रूप में प्रयुक्त होते हैं । स्वरों की मात्राओं को नीचे देखिए और समझिए –

क् + अ = क । (ह्रस्व अ की अलग से मात्रा (Mora) नहीं होती । जब व्यञ्जन हलन्त न हो तो उसमें अ की मात्रा समझ लेनी चाहिए ।)

क् + आ = का ; क् + इ = कि ; क् + ई = की ।
क् + उ = कु ; क् + ऊ = कू ; क् + ऋ = कृ ।
क् + ॠ = कॄ ; क् + ए = के ; क् + ऐ = कै ।
क् + ओ = को ; क् + औ = कौ ।

विशेष –

ह्रस्व स्वर 'ऋ' की मात्रा वाले शब्द कई हैं, जैसे गृह, घृत आदि, परन्तु ॠ का प्रयोग धातुओं एवं शब्द–रूपों में ही मिलता है । जैसे – मातॄः । संयुक्त वर्णों में ह्रस्व इ(ि) की मात्रा संयुक्त वर्ण से पहले लगेगी; जैसे – **रात्रि = र् + आ + त् + र् + इ** । यहाँ त् + र् संयुक्त वर्ण हैं । इनमें इ कि मात्रा त्र के पहले लगी है ।

2. व्यञ्जनों का व्यञ्जनों से मेल (Conjuncts)

जब व्यञ्जन किसी स्वर से न मिलकर किसी व्यञ्जन से ही मिलता है, तो उसे संयोग कहते

हैं । मिले हुए व्यञ्जन को **संयुक्ताक्षर** या **संयुक्त-व्यञ्जन** कहते हैं । जैसे – क् + र = क्र ।

संयोग के नियम को देखें, समझें तथा शब्दों में उनका प्रयोग कैसे होता है, उस पर ध्यान दें ।

व् + य	= व्य	–– व्याकुल ।		ट् + ट	= ट्ट	–– मिट्टी ।
क् + य	= क्य	–– वाक्य ।		ड् + ड	= ड्ड	–– उड्डयन ।
ङ् + ग	= ङ्ग	–– अङ्ग ।		द् + ध	= द्ध	–– अशुद्ध ।
द् + व	= द्व	–– द्वारपाल ।		ह् + य	= ह्य	–– बाह्य ।
ह् + म	= ह्म	–– ब्रह्मा ।		ह् + व	= ह्व	–– जिह्वा ।

कुछ वर्ण संयुक्त होने पर अपना रूप बदल देते हैं । जैसे –

क् + ष = क्ष –– कक्षा ।

क् + त = क्त या क्त–– मुक्ति, भक्ति ।

ज् + ञ = ज्ञ –– यज्ञ ।

त् + त = त्त –– कुत्ता ।

त् + र = त्र –– शत्रु ।

द् + य = द्य –– विद्या ।

र् अगले वर्ण से मिलते समय इस प्रकार 'र्' लिखा जाता है ।

र् + म	= र्म	–– कर्म ।		र् + य	= र्य	–– कार्य ।

जब कोई वर्ण र से मिलता है तो वह इस रूप में लिखा जाता है –

प् + र	= प्र	–– प्रहार ।		क् + र	= क्र	–– क्रम ।
ट् + र	= ट्र	–– राष्ट्र ।					

श् का संयोग श या श के रूप में होता है ।

श् + व	= श्व/श्व	–– अश्व, अश्व ।		श् + र	= श्र	–– श्रीमान ।

वर्णों का उच्चारण-स्थान (Organs of Speech)

सभी वर्णों की अपनी अलग-अलग ध्वनि होती है । ये सभी ध्वनियाँ तभी उच्चरित होती हैं, जब नाभि से उठी हुई वायु मुख के किसी भाग या स्थान से टकराती है । मुख के जिस भाग या स्थान से वायु के टकराने पर किसी वर्ण का उच्चारण होता है, मुख के उस भाग को उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं । कुछ वर्णों के उच्चारण में मुख के एक ही अवयव की सहायता ली जाती है, तो कुछ वर्णों के उच्चारण में मुख के 2 भागों की सहायता ली जाती है ।

संस्कृत-व्याकरण में किन-किन वर्णों के कौन-कौन से उच्चारण स्थान हैं, उनको बताने के

लिए कुछ पारिभाषिक शब्दावली दी गई है, जिनका यहाँ विवरण दिया जा रहा है –

(1) **कण्ठ (Throat) – अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः** – अ, आ, कवर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्), ह् तथा विसर्ग (:) का उच्चारण-स्थान **कण्ठ** है । कण्ठ गले को कहते हैं । इससे बोले जाने वाले वर्ण कण्ठ्य (Guttural)कहलाते हैं ।

(2) **तालु (Palate) – इचुयशानां तालु** । इ, ई, चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), य् तथा श् का उच्चारण-स्थान **तालु** है । ऊपर के जबड़े का कोमल भाग तालु कहलाता है ।इससे बोले जाने वाले वर्ण तालव्य (Palatal) कहलाते हैं ।

(3) **मूर्धा (Roof of the Mouth) – ऋटुरषाणां मूर्धा** । ऋ, ॠ, टवर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र् तथा ष् का उच्चारण स्थान **मूर्धा** है । तालु के ऊपर का खुरदरा भाग मूर्धा कहलाता है । इससे बोले जाने वाले वर्ण मूर्धन्य (Cerebral) कहलाते हैं ।

(4) **दन्त (Teeth) – लृतुलसानां दन्ताः** । लृ, तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल् तथा स् का उच्चारण स्थान **दन्त** है । दाँतों से बोले जाने वाले वर्ण दन्त्य (Dental) कहलाते हैं ।

(5) **ओष्ठ (Lips) – उपूपध्मानीयानामोष्ठौ** । उ, ऊ तथा पवर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्) का उच्चारण स्थान **ओष्ठ** है । इससे बोले जाने वाले वर्ण ओष्ठ्य (Labial) कहलाते हैं ।

(6) **नासिका (Nose) – ञमङणनानां नासिका च** । ङ्, ञ्, ण्, न्, म् तथा अनुस्वार का उच्चारण स्थान **नासिका** भी है । नाक को नासिका भी कहते हैं । नाक से बोले जाने वाले वर्ण नासिक्य (Nasal) कहलाते हैं । इनके उच्चारण में प्राण-वायु मुख के अंग क्रमशः कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ – इन पाँच स्थानों के साथ-साथ नासिका से भी होती हुई बाहर निकलती है, अतः इन वर्णों को **अनुनासिक** भी कहते हैं ।

(7) **कण्ठतालु – एदैतोः कण्ठतालुः** – ए तथा ऐ का उच्चारण स्थान **कण्ठतालु** है । इनमें ए(अ + इ) तथा ऐ(आ + इ) क्रमशः कण्ठ और तालु से उच्चरित होने वाले 2 स्वरों के परस्पर मिलने से बनते हैं, अतः इनके उच्चारण में कण्ठ और तालु दोनों का उपयोग होता है । ये दोनों वर्ण कण्ठ-तालव्य (Guttro-Palatal) कहलाते हैं ।

(8) **कण्ठोष्ठ – ओदौतोः कण्ठोष्ठम्** । ओ(अ + उ) तथा औ(आ + उ) का उच्चारण-स्थान **कण्ठोष्ठ** है । ये दोनों वर्ण कण्ठोष्ठ्य (Guttro-labial) कहलाते हैं ।

(9) **दन्तोष्ठ – वकारस्य दन्तोष्ठम्** । व का उच्चारण स्थान **दन्तोष्ठ** है । अतः यह दन्तोष्ठ्य ध्वनि (Dento-labial Sound) कहलाती है । इसके उच्चारण के समय जिह्वा दाँतों में लगती है और ओष्ठ भी कुछ मुड़ते हैं ।

वर्णों के उच्चारण-स्थानों की तालिका

स्थान	स्वर (13)	व्यञ्जन				
		स्पर्श (25)	अन्तःस्थ (4)	ऊष्म (4)	अयोगवाह (2)	वर्णों की संज्ञा
कण्ठ	अ, आ	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्		ह्	ः (विसर्ग)	कण्ठ्य (Guttural)
तालु	इ, ई	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	य्	श्		तालव्य (Palatal)
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	र्	ष्		मूर्धन्य (Cerebral)
दन्त	ऌ	त्, थ्, द्, ध्, न्	ल्	स्		दन्त्य (Dental)
ओष्ठ	उ, ऊ	प्, फ्, ब्, भ्, म्				ओष्ठ्य (Labial)
नासिका		ङ्, ञ्, ण्, न्, म्			ं (अनुस्वार)	नासिक्य (Nasal)
कण्ठतालु	ए, ऐ					कण्ठतालव्य (Guttro-Palatal)
कण्ठोष्ठ	ओ, औ					कण्ठोष्ठ्य (Guttro-labial)
दन्तोष्ठ			व्			दन्तोष्ठ्य (Dento-labial)

वर्णों के यत्न (अथवा प्रयत्न) (Modes of Articulation)

वर्णों के उच्चारण में जो प्रयास या चेष्टा की जाती है, उसे प्रयत्न कहा जाता है । यह दो प्रकार का होता है – **आभ्यन्तर-प्रयत्न** तथा **बाह्य-प्रयत्न** ।

आभ्यन्तर-प्रयत्न (Internal Mode of Articulation)

उच्चारण के समय किसी वर्ण के मुख से बाहर निकलने के पूर्व मुख के अन्दर जो प्रयास किया जाता है, उसे "आभ्यन्तर-यत्न" कहा जाता है । यह पाँच प्रकार का होता है –

(1) **स्पृष्ट (Mute)** – जिन वर्णों का उच्चारण करते समय जिह्वा वर्णों के सम्बन्धित उच्चारण-स्थानों का पूर्ण रूप से स्पर्श करती है, उनका प्रयत्न 'स्पृष्ट' कहलाता है तथा ऐसे वर्ण स्पर्श-वर्ण कहलाते हैं । क् से म् तक पाँचों वर्गों के सभी 25 (5 × 5) वर्णों का प्रयत्न **स्पृष्ट** होता है ।

(2) **ईषत्स्पृष्ट (Slightly Mute)** – जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा उन वर्णों के सम्बन्धित उच्चारण-स्थानों का थोड़ा स्पर्श करे, उनका प्रयत्न **ईषत्-स्पृष्ट** होता है । ऐसे वर्ण **अन्तःस्थ** कहलाते हैं, क्योंकि ये स्वर तथा व्यञ्जन के मध्य के माने जाते हैं । ये वर्ण हैं – य्, र्, ल्, व् ।

(3) **ईषद्विवृत (ईषत् + विवृत) (Slightly Open)** – जिन वर्णों के उच्चारण में मुख थोड़ा खुला रहता है उनका आभ्यन्तर यत्न **ईषद्विवृत** कहलाता है । सभी ऊष्म-वर्णों (श्, ष्, स्, ह्) का प्रयत्न **ईषद्विवृत** होता है ।

(4) **विवृत (Open)**– जिन वर्णों के उच्चारण-काल में मुख पूरा खुला रहता है, उनका प्रयत्न **विवृत** कहलाता है । सभी स्वरों का प्रयत्न विवृत होता है ।

(5) **संवृत** – संवृत का अर्थ है – मुख का बन्द रहना । किसी भी वर्ण का प्रयत्न संवृत नहीं हो सकता, परन्तु ह्रस्व 'अ' का प्रयत्न संवृत माना गया है । केवल उच्चारण की दृष्टि से ह्रस्व 'अ' का प्रयत्न संवृत माना गया है । व्याकरण में शास्त्रीय प्रयोग की दृष्टि से ह्रस्व अ का प्रयत्न विवृत ही होता है ।

बाह्य-प्रयत्न (External Mode of Articulation)

उच्चारण के समय मुख से वर्ण को बाहर निकालते समय जो यत्न होता है, उसे "बाह्य-यत्न" कहा जाता है । यह 11 प्रकार का होता है, परन्तु उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित – इन तीन यत्नों का उपयोग वैदिक-संस्कृत में होने के कारण यहाँ शेष 8 भेदों की ही चर्चा की जा रही है ।

(1) **विवार** – जिन वर्णों के उच्चारण-काल में मुख खुला रहता है, उनके बाह्य-प्रयत्न को 'विवार' कहा जाता है ।

(2) **संवार** – मुख के अधिक न खुलने पर 'संवार' नामक बाह्य-प्रयत्न होता है ।

(3) **श्वास** – यदि वर्ण के उच्चारण-काल में श्वास बराबर बाहर आती रहे तो 'श्वास' नामक बाह्य-प्रयत्न होता है ।

(4) **नाद** – उच्चारण के समय गम्भीर ध्वनि होने पर 'नाद' नामक बाह्य-प्रयत्न होता है ।

(5) **घोष** – उच्चारण के समय जब श्वास का कण्ठ के भीतर घर्षण होने से गूँज जैसी ध्वनि हुआ करती है तब 'घोष' नामक बाह्य-प्रयत्न होता है । कवर्ग आदि पाँच वर्गों के तीसरे, चौथे तथा पाँचवें वर्ण एवं अन्तःस्थ वर्ण (य्, र्, ल्, व्) और ह् 'घोष' वर्ण होते हैं ।

(6) **अघोष** – जब श्वास के घर्षण के न होने से गूँज जैसी ध्वनि नहीं निकला करती है, तब 'अघोष' नामक बाह्य-प्रयत्न होता है । पाँचों वर्गों के प्रथम तथा द्वितीय वर्ण तथा श्, ष्, स् अघोष वर्ण कहलाते हैं ।

(7) **अल्पप्राण** – मूलाधार से उठने वाले प्राण-वायु (श्वास) का उपयोग जिन वर्णों के उच्चारण के समय कम हुआ करता है, उन वर्णों का बाह्य-प्रयत्न अल्पप्राण (Aspirates) होता है । पाँचों वर्गों के प्रथम, तृतीय तथा पञ्चम वर्ण एवं अन्त:स्थ-वर्ण (य्, र्, ल्, व्) अल्पप्राण होते हैं ।

(8) **महाप्राण** – जिन वर्णों के उच्चारण में मूलाधार से उठने वाले प्राण-वायु (श्वास) का उपयोग अधिक हुआ करता है, उन वर्णों का बाह्य-प्रयत्न 'महाप्राण' कहलाता है । उष्म-वर्ण (श्, ष्, स्, ह्) तथा पाँचों वर्गों के द्वितीय एवं चतुर्थ वर्ण महाप्राण होते हैं ।

बाह्य-प्रयत्नबोधक तालिका

विवार, श्वास, अघोष	संवार, नाद, घोष	अल्पप्राण	महाप्राण
क् ख् श्	ग् घ् ङ् य्	क् ग् ङ् य्	ख् घ् श्
च् छ् ष्	ज् झ् ञ् व्	च् ज् ञ् व्	छ् झ् ष्
ट् ठ् स्	ड् ढ् ण् र्	ट् ड् ण् र्	ठ् ढ् स्
त् थ्	द् ध् न् ल्	त् द् न् ल्	थ् ध् ह्
प् फ्	ब् भ् म् ह्	प् ब् म्	फ् भ्

अभ्यास

1. भाषा का क्या महत्व है ? विश्व की प्राचीनतम भाषा कौन सी है ?
2. शब्द एवं वाक्य की परिभाषा दें ।
3. वर्ण किसे कहते हैं ? वर्णों के तीन प्रमुख भेद कौन-कौन से हैं ?
4. स्पर्श व्यञ्जनों को कितने वर्गों में बाँटा गया है ?
5. अन्त:स्थ और ऊष्म वर्णों में क्या अन्तर है ?
6. तालु और मूर्धा की स्थिति कहाँ-कहाँ है ?
7. निम्नलिखित नाम जिन वर्णों के हैं, उन्हें लिखिए ।
   मूर्धन्य .....
   तालव्य .....
   नासिक्य .....
8. आभ्यन्तर तथा बाह्य-यत्न में क्या अन्तर है ?